(ख) दैवीय-प्रकाशना (Revelation)—प्रकाश की आवश्यकता अंधेरे को दूर करने के लिए होती है। दार्शनिक दृष्टि से गूढ़ तथा दुर्बोध रहस्य को सुबोध रूप में प्रकट करना ही प्रकाशना है। ईश्वर देव है, उनके वचन प्रायः अप्रकट तथा अप्रकाशित से लगते हैं, जिन्हें वे स्वयं या उनके अनुयायी संत प्रकाशित करते हैं, यही दैवीय प्रकाशना है। इस प्रकाशना के माध्यम से देव-दुर्लभ वचन मनुष्य सुलभ हो जाते हैं। यदि देववाणी पर देवता, ऋषि, योगी आदि का प्रकाश न पड़े तो इन वाणियों से मनुष्यों का लाभ नहीं होगा। संसार के बड़े से बड़े धर्मों में देव या ईश्वर की वाणियाँ संकलित की गयी हैं। ईश्वर परम-तत्व और परम-सत्य का उद्घाटन करना चाहता है; परन्तु दैवीय प्रकाश के बिना मनुष्य इन्हें सही नहीं समझ पाता। सत्य के स्वरूप को समझना सरल नहीं। तत्व अगम्य होता है, मानव इन्हें समझना

Scanned by TapScanner

चाहता है और प्राप्त करना चाहता है परन्तु देववाणी को वह देव-प्रकाश के बिना न तो समझ पाता है और न ही प्राप्त कर पाता है।

धर्म-दर्शन के विद्वानों का कहना है कि दैव-प्रकाशन धार्मिक विश्वास का आधार है। ईश्वर सत्य और तथ्य के स्वरूप पर स्वयं प्रकाश डालता है, उसके प्रकाश के बिना ससीम और सान्त मानव असीम और अनन्त तत्त्व को नहीं समझ पाता। सत्य को समझे बिना और तत्त्व को जाने बिना विश्वास नहीं जमता और आस्था नहीं बनती। इसी कारण दैवीय प्रकाशन को धार्मिक विश्वास का आधार माना गया है। ईश्वर ही ईश्वरीय विषयों को प्रकाशित कर सकता है। कभी किसी चमत्कार के द्वारा, कभी अवतार ग्रहण कर स्वयं ईश्वर ही सत्य को प्रकाशित करता है तथा अपने स्वरूप का यथार्थ ज्ञान मनुष्य को देता है। एक आवश्यक प्रश्न यह है कि दैव-प्रकाशना की मानव के लिए क्या उपयोगिता है? दूसरा प्रश्न है कि क्या मानव इनकी परीक्षा कर सकता है?

धर्म के लिए दैवीय-प्रकाशना को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि ईश्वरवादी धर्मों में ईश्वर ही धर्म का केन्द्र माना जाता है तथा ईश्वर से मनुष्य का मिलन धर्म का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही मनुष्य धार्मिक कार्य करता है, परन्तु ईश्वर से मनुष्य के मिलन का मार्ग दैवीय-प्रकाशना से ही सम्भव हो पाता है। मनुष्य में ईश्वर की खोज के लिए जो व्यग्रता है, वह प्रकाशना के बिना शान्त नहीं होती। अतः धर्म के लिए दैवीय प्रकाशना का उपयोग है, क्योंकि यह ईश्वर-मिलन की व्यग्रता में सहायक है। दैवीय-प्रकाशना की परीक्षा सम्भव नहीं। इसके द्वारा ईश्वर अपने आपको प्रकाशित करता है। यह मनुष्य की सीमा के बाहर है। ससीम मानव असीम ईश्वर की प्रकाशना में केवल श्रद्धा कर सकता है परन्तु वह इसकी परीक्षा नहीं कर सकता।

दैवीय-प्रकाशना के अनेक माध्यम हैं, उदाहरणार्थ—स्वप्न, दिव्य-दर्शन, आकाशवाणी, संतों आदि के माध्यम में दैवीय-प्रकाशना अभिव्यक्त होती है। तात्पर्य यह है कि इन माध्यमों से ईश्वर अपना ज्ञान मनुष्य तक पहुंचाता है। दैवीय-प्रकाशना के निम्नलिखित प्रमुख साधन हैं—

(क) अवतार के माध्यम से दैवीय-प्रकाशना अभिव्यक्त होती है। कुछ ऐसी आत्मायें विश्व में कभी-कभी अवतरित होती हैं जिनके माध्यम से ईश्वरीय प्रकाशना की झलक मिलती है, उदाहरणार्थ—ईसा मसीह, कृष्ण, राम, पैगम्बर मुहम्मद आदि के माध्यम से धरती पर ईश्वरीय संदेश का संचार होता है। भगवान कृष्ण ने स्वयं भगवद्गीता में बतलाया है कि जब-जब धर्म का ह्रास होता है और

Scanned by TapScanner

अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं अवतरित होकर साधुओं की रक्षा और राक्षसों का विनाश कर प्रत्येक युग में धर्म की स्थापना करता हूँ। भगवान कृष्ण के इन वचनों से स्पष्ट होता है कि अवतार के माध्यम से ईश्वर धर्म को प्रकाशित करता है।

(ख) ईश्वरीय प्रकाशना के द्वारा ईश्वर की अद्भुत-शक्ति का मानव प्रत्यक्ष करता है। सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता ईश्वर है, वह परम विचित्र है, जिसे मनुष्य नहीं समझ सकता। प्रकाशना के द्वारा ईश्वर मानव को अवसर प्रदान करता है कि मानव उसकी विचित्रताओं से अवगत हो सके।

(ग) धर्मशास्त्रों के माध्यम से ईश्वरीय प्रकाशना अभिव्यक्त होती है। वेद, बाइबिल, कुरान आदि धर्म-ग्रन्थों में ईश्वरीय झलक मिलती है, इन ग्रन्थों में ईश्वरीय आदेश हैं जिनका पालन मानव के लिए अनिवार्य है।

(घ) कभी-कभी ईश्वरीय आदेश आकाशवाणी के माध्यम से प्राप्त होते हैं तो कभी किसी को दिव्य स्वप्न द्वारा ईश्वरीय झलक प्राप्त होती है। जीवन में कुछ ऐसी विशेष घटनायें होती हैं जिनमें ईश्वर का हाथ मालूम पड़ता है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि ईश्वरीय झलक की अभिव्यक्ति होती है परन्तु इसका सबसे प्रमुख साधन धर्मशास्त्र या श्रुति है।

श्रुति या धर्मशास्त्र—धर्मशास्त्रों की रचना में ईश्वरीय प्रेरणा को ही मूल माना जाता है। प्रायः धर्मशास्त्रों के रचयिता का पता नहीं। धर्म-शास्त्र को श्रुति कहते हैं, क्योंकि यह गुरु-शिष्य की श्रवण-परम्परा से चली आ रही है। वेद के मन्त्रों का रचयिता कोई नहीं। मन्त्र ईश्वर की प्रेरणा से उत्पन्न हुए तथा गुरु-शिष्यों की परम्परा से समाज में चले आ रहे हैं, इन्हें ही श्रुति या वेद कहते हैं, जिनकी रचना ईश्वर की प्रेरणा से होती हैं। इन श्रुतियों के माध्यम से ईश्वरीय झलक दिखलायी देती है। ज्ञान के सबसे बड़े भण्डार (वेद) की रचना करने वाला ईश्वर ही हो सकता है। वेदों की रचना के सम्बन्ध में भारतीय दर्शन में दो विचार हैं। कुछ दार्शनिक इन्हें अपौरुषेय और कुछ पौरुषेय मानते हैं, परन्तु प्रायः अपौरुषेय मानने वालों की संख्या अधिक है। इन्हें ईश्वरीय कृति समझा जाता है, जिनके माध्यम से ईश्वरीय आदेश प्राप्त होते हैं। वेदों के समान कुरान भी ईश्वर का वचन है और इसी प्रकार बाइबिल को भी ईश्वर का वचन मानते हैं। कुरान और बाइबिल के द्वारा मानव का मार्ग-दर्शन हुआ है। वेद, कुरान, बाइबिल आदि परम-पवित्र ग्रन्थ हैं, क्योंकि इनमें परम-पवित्र ईश्वर की वाणी का संकलन है। इन धर्म-ग्रन्थों के द्वारा ईश्वर दिव्य-ज्ञान प्राप्त कराता है, जिसके माध्यम से मनुष्य को परमतत्त्व तथा चरमसत्य की उपलब्धि होती है। इन धर्म-शास्त्रों के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि

Scanned by TapScanner

इन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना ही मानव के लिए धर्म है। मनुष्य इसकी परीक्षा नहीं कर सकता। प्रायः स्वीकार किया जाता है कि धर्म-शास्त्रों की प्रामाणिकता स्वतः है, अन्य धर्म-ग्रन्थों के वचन में यदि सन्देह उत्पन्न हो जाय तो उनकी परीक्षा वेदों से हो सकती है परन्तु वेदों की परीक्षा का आधार कुछ भी हो नहीं सकता, अतः श्रुति स्वतः प्रामाणिक है। श्रुति ईश्वर का संदेश है अथवा उनकी आज्ञा है। ईश्वरीय आज्ञा के लिए किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। मनुष्य का कार्य केवल इन आज्ञाओं को स्वीकार करना है तथा ईश्वर के बतलाये गये मार्ग पर चलना है। इस ईश्वर प्रणीत मार्ग से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि श्रुतियों की स्वतः प्रामाणिकता धार्मिक विश्वास का आधार है।

Scanned by TapScanner